प्रधानमंत्री ने अजमेर शरीफ दरगाह में भेंट दी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **'उर्स' के** अवसर पर [सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती](#) की **अजमेर शरीफ दरगाह** पर **चढ़ाने** के लिये अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू को **'चादर' भेंट की।**

- उर्स उत्सव राजस्थान के अजमेर में आयोजित होने वाला एक वार्षिक उत्सव है जो सूफी संत मोईनुद्दीन चिश्ती की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

//

मुख्य बिंदु

- **ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती:**
  - मोईनुद्दीन हसन चिश्ती का जन्म 1141-42 ई. में **ईरान के सिजिस्तान (आज के समय में सिस्तान) में हुआ था।**
  - मुइज़ुद्दीन मुहम्मद बिन साम गौर ने [तराइन के दूसरे युद्ध (1192)](#) में [पृथ्वीराज चौहान](#) को पराजित कर दिया था और दिल्ली में अपना शासन स्थापित कर लिया था, उसके पश्चात **ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर में रहना और उपदेश देना शुरू कर दिया था।**
  - आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण उनके शिक्षाप्रद प्रवचनों ने जल्द ही स्थानीय जनता के साथ-साथ दूर-दूर से राजाओं, कुलीनों, किसानों और गरीबों को भी अपनी ओर आकर्षित किया।
  - **अजमेर स्थित उनकी दरगाह पर** [मुहम्मद बिन तुगलक](#), [शेरशाह सूरी](#), [अकबर](#), **जहाँगीर,** [शाहजहाँ](#)**, दारा शिकोह और** [औरंगजेब](#) जैसे

शासकों द्वारा दौरा किया गया।

- **चिश्ती सिलसिला (चिश्तिया):**
  - चिश्तिया सिलसिले (Order) की **स्थापना भारत में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती ने की थी।**
  - इसमें **ईश्वर के साथ एकता** (वहदत अल-वुजूद) के सिद्धांत पर ज़ोर दिया गया तथा इस सिलसिले के सदस्य शांतिवादी भी थे।
  - उन्होंने **सभी भौतिक वस्तुओं को** ईश्वर के चिंतन में बाधा मानकर अस्वीकार कर दिया।
  - वे **धर्मनिरपेक्ष राज्य** से संबंध रखने से दूर रहे।
  - **ईश्वर के नामों का उच्चारण, ज़ोर से और मन ही मन (धिक्र-जहरी, धिक्र-खफी)** करना, चिश्ती प्रथा की आधारशिला थी।
  - चिश्ती शिक्षाओं को ख्वाजा मोइन-उद्दीन चिश्ती के **शिष्यों जैसे ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर, नज़िाम उद्दीन औलिया और नसीरुद्दीन चराग** द्वारा आगे बढ़ाया और लोकप्रिय बनाया गया।

सूफीवाद

- सूफीवाद **इस्लाम का एक रहस्यवादी रूप है,** एक अभ्यास विद्यालय जो ईश्वर की आध्यात्मिक खोज पर केंद्रित है और भौतिकवाद से दूर रहता है।
- यह इस्लामी रहस्यवाद का एक रूप है जो **तप पर ज़ोर देता है।** इसमें ईश्वर के प्रति समर्पण पर बहुत ज़ोर दिया जाता है।
- सूफीवाद में, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के लिये **आत्म अनुशासन को एक आवश्यक शर्त माना जाता है।**
- रूढ़िवादी मुसलमानों के विपरीत, जो बाह्य आचरण पर ज़ोर देते हैं, सूफी **आंतरिक पवित्रता पर ज़ोर देते हैं।**
- सूफियों का मानना है कि **मानवता की सेवा** ईश्वर की सेवा के समान है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/pm-offering-to-ajmer-sharif-dargah